बीन क्या पकड़ी सपेरा हो गया !

(पारम्परिक हिन्दी छन्दों एवं उर्दू बहरों में गजलें)

डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक	**बीन क्या पकड़ी सपेरा हो गया !** **(Been Kya Pakari Sapera Ho Gaya)**
कृतिकार	डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
स्थायी पता	1. ग्राम व पोस्ट – विनौरा वैद्य तहसील – कालपी, जिला – जालौन उ.प्र. – 285123 2. स्थायी एवं पत्र व्यवहार का पता – 1001–A, 'श्रीवास्तव निलय', चुर्खी रोड बघौरा, (सरकारी ट्यूब वैल के पीछे गली) उरई (जालौन) उ.प्र., पिन – 285 001 मोबाइल : 7408439308 व्हाट्सएप : 8595137010
प्रकाशन	प्रथम बार (500 प्रतियाँ)
प्रथम संस्करण	सन् 2022
मूल्य	₹ 290.0
प्रकाशक	इंजी. कृष्णेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव इंजी. यतीन्द्र बहादुर श्रीवास्तव] पुत्रद्वय
आवरण सज्जा व मुद्रक	नाइस ग्राफिक्स, उरई

Scanned with OKEN Scanner

बीन क्या पकड़ी सपेरा हो गया !

(पारम्परिक हिन्दी छन्दों एवं उर्दू बह्रों में ग़ज़लें)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	ग़ज़ल का मुखड़ा	ग़ज़ल क्रमांक
i.	समकालीन व्यवस्था तथा गिरते मानव मूल्यों पर चोट करती ग़ज़लें : डॉ. रसूल अहमद 'साग़र'	ix
ii.	अभिमत : डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार 'अभय'	xii
iii.	कुशल कर्मयोगी कविवर 'श्याम' जी : डॉ. रामकृपाल 'कृपाल'	xiv
iv.	निज कथन : डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'	xv
v.	ग़ज़लें (हिन्दी वर्णमाला क्रम)	
*	अ से अः तक	
1.	अनर्गल बात करने को हमारा जी नहीं करता	52
2.	अपने कृत्यों का उनने इस तरह प्रचार किया	54
3.	अपने तो साहब बढ़िया कुछ किया नहीं करते	108
4.	आओ अब प्रारम्भ नया अभियान किया जाये	32
5.	आग लगी पानी में देखें कौन बुझाता है !	31
6.	आचरण से साँप भी भयभीत हैं, इतने विषैले	78
7.	आचरण सदियों पुराने आज कन्टीन्यू लगे	77
8.	आजकल का आदमी बेदर्द है कितना	26
9.	आजकल हर बात कहती है ग़ज़ल	75
10.	आदमी की नित परीक्षा हो रही	42
11.	आदर्शों के बीज बहुत कुछ घुने-घुने से हैं	115
12.	आप तो मुस्करा कर चले	06
13.	आपने सुझाया जो याकि कुछ लिखाया है	97
14.	आँसुओं पर ये असर किसका हुआ	100

Scanned with OKEN Scanner

15.	इधर देखना है उधर देखते हैं	22
16.	इन्होंने उन्होंने जिन्होंने कहा है	18
17.	एक दिन शक़्ल आ दिखा जाओ	113
18.	और के पैरों चलोगे कब तलक	104
★	क से घ तक	
19.	क्या कहें किसके सहारे चल रहे	79
20.	क्यों व्रतों में तन सुखाये डालते	92
21.	कब मरें हम, वे प्रतीक्षा कर रहे	117
22.	कवि से पहले कविता बनिए, कैसा विष्मय!	121
23.	कुम्भकरण सी नींद लिये तू कब तक सोयेगा	64
24.	किसी भी पर्व पर शुभकामना उसको न मिलने की	53
25.	केश धवल हैं पर अन्तस का रंग गुलाली है	61
26.	कैसे-कैसे झोल सहे जाते हैं जीवन में	120
27.	कैसे लोगों में रह के श्रीमान् पले हैं	98
28.	कोई बात करोगे किससे!	47
29.	खुशियों का हर एक ख़जाना यार! मुबारक	59
30.	गाँव साँपों का जहाँ हम रह रहे हैं	08
31.	गाली सुनता, मारें सहता, उस पर थू-थू	50
32.	गीत कोई न गुनगुनाऊँगा	88
33.	गीत ग़ज़ल कवितायें लिखना-पढ़ना भाता है	123
34.	गुप्त भजन का लगता कोई तथ्य मिल गया	56
35.	घर अपना वह किन्तु न उसमें घुसने तलक दिया	34
36.	घूमो सँग तारों के या दिन को रात करो	30
37.	घोड़ों जैसा हमको चाबुक मार नचाया	97
★	च से झ तक	
38.	चलते रहो गति के बिना निस्सार ज़िंदगी	125
39.	चाँद पर अब लोग बसना चाहते हैं	74
40.	चूकते हैं वे न अपने दावँ पर	13
41.	जाग जा अब तो सबेरा हो गया	41

42.	ज़िंदगी के सफ़र में इक शामियाना चाहिए	17
43.	जिस डाल पै बैठे उसे ही काटने लगे	57
44.	जो न मिलना कभी ज़माने से	102
45.	जो न हरगिज़ ठीक तू वह चाल सरपट चल रहा	106
*	ट से ढ तक	
46.	डाकू-चोर न थे हम हमको भटकाया उनने ही	69
*	त से न तक	
47.	तन तपाया पीर अपनी साधना किससे कहे !	38
48.	थे नहीं पर कर दिये कमजोर कह-कहकर	81
49.	दर्द कुछ ऐसे जिन्हें हम कह नहीं पाते	19
50.	दहकते शोले निगलना है कठिन	23
51.	द्वार से भूखे भगाये जा रहे	14
52.	देख हमको बन्द सब घर की कराईं खिड़कियाँ	93
53.	देखा और सुना-भोगा हम कहते चले गये	03
54.	देखा है हमने पतझर बरसातों में भी	46
55.	देव नहीं मानव बन पायें यार ! बहुत है	72
56.	न्याय के घर ही कहीं उत्पात पलता है	05
57.	न्याय कभी दुष्कर्मों का हमदर्द नहीं होता	55
58.	नहीं शौक़ कविता सुनाता फिरूँ मैं	11
59.	नाटकीय प्यारों में, लूटते बजारों में	40
60.	नाव फँसी मझधार नाविक निरबल आदमी	16
61.	निबल जनों के घर जलवाये अच्छी बात नहीं	68
*	प से म तक	
62.	प्यार किसको नहीं लुभाता है	110
63.	प्यार दर-दर भटकने लगा	91
64.	प्यार का इक निलय चाहिए	25
65.	प्यार मेरा नकारते क्यों हो	112
66.	प्यार करना मुझे नहीं आता	105
67.	प्यार में कोई बहाना भी नहीं आता मुझे	90

Scanned with OKEN Scanner

68.	प्यार हो यार! तो चले आओ	101
69.	प्रतिभायें तो बहुत क़दर करने वाला तो हो	36
70.	प्रहरी ही जब घर लुटवाये, इसको क्या मानें!	48
71.	प्रहरी होकर सो जाते हैं, क्या मानें इसको!	49
72.	प्रेम-ममता-शील का आगार है नारी	87
73.	पवन विषाक्त चली जिसने जीते जी मार दिया	71
74.	पास उनके क्या रहे उनने बढ़ाईं दूरियाँ	116
75.	फिल्म से ले ली अदा-तहज़ीब रहने की	58
76.	बल आया जब तब कोई जाँबाज़ नहीं कहता	70
77.	बलि ले खुश हो देव जो मानों मत भगवान	15
78.	बात क्या हुई उनसे, लक्ष्य पालिया मानो	111
79.	बात क्या हुई उनसे दिल युवा हुआ मानो	114
80.	बातों भर से काम चलेगा, हमें नहीं लगता	04
81.	बाहुबली भगवानों को सत्कार दिया करते हैं	84
82.	बिखरे उलझे केशों में चण्डी-सी लगती हो	66
83.	बाहुबलियों के नगर में कब तलक कुट-कुट जियें!	51
84.	बिच्छू औ' साँपों में हमने रहना सीख लिया	85
85.	बीज सभी अब आदर्शों के बोते ख़तम हुए	34
86.	बुलबुलें फुदकें उन्हें मत रोकिए	27
87.	भाई-बहिनो! हर्ष भरा त्योहार मुबारक	60
88.	मन्दिरों यज्ञों कथाओं की बहुत भरमार है	12
89.	मधु हमें कैसे मिले जब फूल सब मुरझा गये	44
90.	मन बने मधुमास ग़र तो माफ़ करना	82
91.	ममतामयी माता ! हमें अपना दुलार दो	01
92.	मरते ही को मार रहा तू धत् तेरे की	67
93.	मानव सँग मानव जैसा व्यवहार न आया तो क्या आया!	65
94.	मानव में मानवता को हम कर न सुदृढ़ पाये	63
95.	मुस्कराओ मुस्कराना ज़िंदगी	10
96.	मुश्किल से सौहार्द भरा मधुमास मिला करता है	29

97.	मेघ! तुम रोज़-रोज़ आते हो	99
98.	मेरे सृजन किसे क्या देंगे इसका पता नहीं	109
99.	मैं तुम्हें बुलाता हूँ यार ! तुम न आते हो	96
*	य से ज्ञ तक	
100.	रस रंग रागों शक्तियों की खान है हिन्दी	73
101.	रे चाँद! तुझे क्या समझा था, तू तो कंकड़-पत्थर निकला	28
102.	लगता है हर व्यक्ति यहाँ का सचमुच रोगी है	33
103.	लग रही हमसे हमारी ही कटी सी ज़िंदगी	09
104.	लिखित दिया आदेश नियम से काम तुरत करने का	107
105.	ले कटोरा एक भिक्षुक आ गया त्योहार पर	39
106.	वक़्त ये कंबख़्त क्या से क्या कराता जा रहा	24
107.	वश भर तो दुनिया वालों ने हँसने नहीं दिया	02
108.	वाह ज़माने! तू तो पूरा-पूरा बदल गया	45
109.	विजन सा आभास देते हैं शहर	21
110.	विधि की सकल कला कृतियों को बारम्बार नमन	62
111.	'श्रेष्ठ कला' संस्कृति को शुभ परिवेश दिया करती है	118
112.	शक्ति-सुषमा-सौख्य का अभिसार है बेटी	86
113.	सर्जना को लोग दल दल में फँसाना चाहते	80
114.	साँच को झूठ भाने लगा	43
115.	सीढ़ियाँ चढ़ते हुए चुक से गये हैं हम	83
116.	सोचना होगा कि किसको यार! क्या हमने दिया!	37
117.	सोचता हूँ तुझे भुला दूँ मैं	124
118.	हम अपना कश्मीर किसी को दे दें कैसे!	103
119.	हम अभी खिल भी न पाये थे कि मुरझाने लगे	07
120.	हम शहर आये हमें रूठे हुए लगते शहर	20
121.	हादसों पर वे उधर जलसे मनायें	122
122.	हेरा-फेरी करके धोखे देंगे किसको	95
123.	हैं कई नाले यहाँ, कोई किधर भी बह गया	76
124.	हो गया खण्डहर मकाँ मेरा	89

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner